__/__/____

Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh

Date - Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 1
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग - 6
पाठ - 7 'मेरा बचपन'

निम्नलिखित उत्तर संक्षेप में लिखो :-

(क) लेखक के अनुसार उन दिनों शहर में न तो चैंस थी, न बिजली - बत्ती । इसलिए पढ़ने के घर में दो बातियों का एक दीया जला करता था।

(ख) वक़्त के गुजरने के साथ, जब उस तालाब में गाड़ियों में भर-भर गंदगी डाली जाने लगी, तब रवींद्रनाथ के घर के पास वाला तालाब समाप्त हो गया।

(ग) लेखक बताते हैं कि उन दिनों बाज़ार में एक पैसे दाम वाली गुलाबी रेवड़ियाँ मिलती थीं। यह रेवड़ियाँ गुलाबी खुशबू से बसे हुए तिल से ढके चीनी के ढेले होते थे।

निम्नलिखित उत्तर विस्तार से लिखो :-

(क) ब्रजेश्वर रवींद्रनाथ ठाकुर के घर में नौकर-नौकरानियों का सरदार था। सिर और मूँछों के बाल कुछ काले और कुछ सफ़ेद थे। मुँह के ऊपर फूलती हुई सूखी झुर्रियाँ और मिज़ाज गम्भीर था। गाँव की पाठशाला में वह पढ़ाने का काम कर चुका था। भीतर ही भीतर उसके मन में भोजन का लोभ दबा हुआ था।

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class- VI
Subject- Hindi Literature Page-2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

(ख) रवींद्रनाथ जी को कम खाने की आदत, उनके नौकर ब्रजेश्वर के स्वभाव में एक दोष के कारण पड़ गई। यह दोष था कि ब्रजेश्वर के मन में भोजन का लोभ दबा हुआ था। जब वो लोग खाने बैठते तो ब्रजेश्वर एक-एक पूड़ी अलग से ही हाथ में झुलाता हुआ पूछता "और दूँ?" रवींद्रनाथ अकसर न में जवाब देते थे। इस पर ब्रजेश्वर कोई आग्रह भी न करता था। इस प्रकार थोड़ा खाना बचपन से ही बड़े मज़े से रवींद्रनाथ को बर्दाश्त हो जाता।

(ग) रवींद्रनाथ जब बीमार पड़ जाते थे तो पहले दिन तो कैस्टर आयल और उपवास की व्यवस्था की जाती थी। पानी बहुत थोड़ा पीने को मिलता था, जो मिलता था वह भी बारस और उसके साथ इलायची के दाने दिए जाते थे। तीन दिन के बाद ही 'मोरला मछली' का शोरबा और खूब गला हुआ भात उपवास के बाद खाने को मिलता था। इस तरह से उनकी बीमारी का इलाज किया जाता था।

(घ) रवींद्रनाथ लिखते हैं कि यदि मैं सरदियों के दिनों में पानी में भिगोया हुआ जूता पहन कर दिन भर भी घूमता रहा, तब भी मुझे सरदी न लगती थी। कार्तिक के महीने में खुली छत पर सोया, कुर्ता और बाल भीगा गए, लेकिन न कभी गला खराब हुआ न ही खाँसी हुई। पेट में भी कभी बदहज़मी नहीं हुई। इन बातों से पता चलता है कि वह शरीर से तंदरुस्त थे।

Last page.

Scanned with CamScanner